

माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो० कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 21 मार्च 2016 को चौ० रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद में अखिल भारतीय अन्तर-विश्वविद्यालय योग प्रतियोगिताओं के शुभारम्भ अवसर पर दिया गया भाषण।

लेफ्टीनेंट जनरल रिटायर्ड श्री वी० के० चतुर्वेदी जी, इस विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल रिटायर्ड डॉ० रंजीत सिंह जी, Dr. S.K. Sinaha Registrar of this university, All India Inter university Yoga tournament के Organizing Secretary Prof. Susheel Ji, शहीद कैप्टन पवन कुमार के पूज्य पिता जी श्री राजबीर सिंह जी, आसपास के गाँव से पधारे हुए महानुभाव, कैप्टन पवन कुमार जिस गाँव के रहने वाले थे उस बधाना गांव की पंचायत के महानुभाव, युनिवर्सिटी के फ़ैक्लटी मेंबर तथा कर्मचारीगण, प्रशासनिक अधिकारीगण, मीडिया पर्सनल्स तथा अखिल भारतीय अंतर-विश्वविद्यालय योग प्रतियोगिता में देशभर से लगभग 200 से ज्यादा टीमों यहाँ पर उपस्थित हैं, ऐसे सभी उपस्थित प्रतियोगियों, भाईयो और बहनो!

इस युनिवर्सिटी का जन्म ज्यादा पहले का नहीं है, सिर्फ़ डेढ़ वर्ष पहले का है। डेढ़ वर्ष की अवधि में इस विश्वविद्यालय ने जो प्रगति की है, जो कीर्तिमान स्थापित किए हैं, उनका वर्णन सिर्फ़ प्रशंसा करने से नहीं हो सकता। वास्तव में तो इन्होंने प्रगति का एक ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत किया है। जब मैं इस विश्वविद्यालय में, आपकी यह पुरुषों और महिलाओं की अखिल भारतीय प्रतियोगिता और खासकर योग की, जो भारत की पुरानी संपत्ति है, पुरानी पहचान है और मरीज को ठीक करने का जो रामबाण इलाज है, ऐसी प्रतियोगिता संपन्न होते हुए देखता हूँ तो मुझे इस बात का गर्व और गौरव है कि मैं इस विश्वविद्यालय का चांसलर हूँ। यह विश्वविद्यालय ग्रामीण एरिया में है। ग्रामीण एरिया में जब इस तरह से प्रगति होती है तो शहर की अपेक्षा इस प्रगति को देखकर दोगुणी खुशी होती है।

मैं सोच रहा था कि इस प्रगति का कारण क्या है? इसका सबसे पहला कारण तो यहाँ के वाइस चांसलर हैं, कुलपति हैं। ये जितनी जल्दी-जल्दी बोलते हैं काम भी उतनी ही जल्दी-जल्दी करते हैं। कई बार इतना जल्दी बोलते हैं कि बात ही समझ में नहीं आती। लेकिन काम भी उतनी ही जल्दी करते हैं कि यह समझ में नहीं आता कि ऐसा कैसे हो गया? मैं सोच रहा था कि इनमें इतनी ताकत कहाँ से है? तो आज मुझे पता चला है कि इनकी पत्नी भी इतनी ही योग्य, कुशल और ताकतवर हैं। ये दोनों जब योग कर रहे थे तो मुझे लग ही नहीं रहा था कि ये कुलपति और कुलपति की पत्नी हैं। मुझे तो लग रहा था कि ये विद्यार्थी हैं। मैं इनके स्वास्थ्य के लिए पूर्ण कामना करता हूँ और अगर हरियाणा में योग का विश्वविद्यालय खोलना पड़ा तो इनसे अच्छा कुलपति कोई नहीं हो सकता।

प्रगति का एक दूसरा कारण और भी है। अभी तो स्थाई फ़ैक्लटी मेंबर हैं नहीं, अभी तो उनकी नियुक्ति होनी है। लेकिन इधर-उधर से लोग लेकर उन्होंने इस विश्वविद्यालय को जो आगे बढ़ाया है, उनका भी परिश्रम बहुत उत्साहवर्धक है। वे बहुत परिश्रम से,

लगन से काम कर रहे हैं। जो प्रगति बच्चों में दिखती है, बालकों में दिखती है, विद्यार्थियों में दिखती है उस प्रगति के पीछे अध्यापक होता है, प्रोफेसर होता है, फ़ैक्लटी होती है। अगर उन्हें प्रेरणा और सही दिशा नहीं मिलेगी तो यूनिवर्सिटी तो कई हैं पर वहाँ पर इस प्रगति के और उत्साह के लक्षण देखने को नहीं मिलते।

एक तीसरा कारण और भी है कि इस विश्वविद्यालय के आसपास रहने वाले गांवों के लोग, जिला जींद के रहने वाले लोग उन्होंने इस विश्वविद्यालय को इस तरह से स्वीकार किया है, इस तरह से इस विश्वविद्यालय की प्रगति में वे हिस्सा लेते हैं जैसे कोई पिता अपने बालक को आगे बढ़ाने में परिश्रम करता है। यह विश्वविद्यालय जींद का, इस क्षेत्र का, सभी ग्रामों का, शिक्षा के क्षेत्र का बालक है।

अभी शहीद कैप्टन पवन कुमार के गाँव बधाना की पंचायत के लोग मुझे मिले। उन्होंने कहा कि हम कैप्टन पवन कुमार की स्मृति में, उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करते हुए, श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए, 100 एकड़ जमीन निःशुल्क देने को तैयार हैं। यह जो त्याग और समर्पण की भावना है, वास्तव में किसी भी काम को, किसी भी प्रोजेक्ट को, किसी भी संस्था को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान करती है। इस क्षेत्र में मैडिकल कॉलेज, इस क्षेत्र में शिक्षण संस्था खोलने की घोषणाएँ हुई हैं। मैं चांसलर होने के नाते सरकार से निवेदन करूँगा कि ग्राम पंचायत बधाना के लोगों ने अपनी जो श्रद्धा प्रकट की है उसका आदर किया जाए। उनको सम्मान दिलाया जाए।

आप तीन दिन के लिए 21, 22 और 23 के लिए पूरे देशभर से इस प्रतियोगिता के लिए यहाँ पर इकट्ठे हुए हैं, यह काम भी बहुत प्रेरणादायी है। अगर हम योग को भूल जाएँगे तो भारत याद नहीं आएगा। भारत और योग, ये दोनों inter dependable हैं, ये दोनों अन्योन्याश्रित हैं, एक दूसरे के ऊपर निर्भर हैं। अगर भारत को जानना है तो योग को जानो। जैसा रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि अगर भारत को जानना चाहते हो तो स्वामी विवेकानंद को जानो। जब तक आप स्वामी विवेकानंद जी को नहीं जानोगे भारत की आत्मा को नहीं पहचान पाओगे। उसी तरह से मैं यह कहना चाहता हूँ कि अगर भारत को जानना चाहते हो तो योग को जानो। जब तक आप योग नहीं जानोगे भारत को नहीं पहचान पाओगे। बिना योग का अवलंबन किए, बिना योग का सहारा लिए, बिना योग को अपने जीवन में उतारे आप पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में तो दिखोगे लेकिन भारत के मनुष्य के रूप में नहीं दिखोगे। भारत का मनुष्य अगर आपको बनना है तो आपको योग का सहारा, योग का अवलंबन स्वीकार करना पड़ेगा।

यह योग भारत से विदेशों में गया। विदेशों में लोगों ने इस योग का लाभ उठाया। जब योग भारत से विदेशों में गया तो यह योग के स्थान पर योगा हो गया। वास्तव में तो यह योग है। योग का मतलब है प्लस, addition, जोड़। किसी भी हैल्थ की संस्था में जाएँगे, स्वास्थ्य की संस्था में जाएँगे, कोई डॉक्टर जब prescription लिखेगा तो + लिखता है। यह योग का पहला अर्थ है।

भगवान ने आपको जितना स्वस्थ शरीर दिया है, उस शरीर को आपको स्वस्थ रखना है, प्लस रखना है, वैसा का वैसा ही रखना है, शरीर के अंदर कोई भी कमी अगर आती है तो उसे दूर करना है तो उस कमी को दूर करने का एकमात्र इलाज है योग। इसलिए यह योग कहलाता है। जरा आप योग करके तो देखिए। शरीर के अंदर कोई भी कमी अगर आएगी तो योग उसको पूरा करेगा। इसलिए इसका नाम योग है।

योग तो ऋग्वेद में भी मिलता है जो 10–12 हजार साल पुराना वेद है। अन्य वेदों में भी योग मिलता है। लेकिन ईसा के 2200 वर्ष पूर्व पतंजलि ने इसे नई व्याख्या दी। उन्होंने अष्टांग योग की व्याख्या की जिसमें यम आता है, जिसमें नियम आता है, जिसमें आसन आते हैं, जिसमें प्राणायाम आता है, जिसमें प्रत्याहार आता है, जिसमें धारणा आती है, जिसमें ध्यान आता है और अंत में समाधि आती है। जब आप मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं, सबके साथ एकाकार हो जाते हैं, कहीं आपको अंतर और भेद नहीं दिखता, आप समाधि में परम शक्ति के साथ एकाकार हो जाते हैं। यह अष्टांग का रूप दिया।

योग सिर्फ संकीर्ण कल्पना नहीं है। अगर आपका स्वभाव भक्ति का है तो भक्ति योग अपनाइए। अगर आपका स्वभाव ज्ञान का है तो ज्ञान योग अपनाइए। और भक्ति और ज्ञान कुछ भी नहीं है, कर्म करना आता है तो आप कर्मयोग अपनाइए। पुरुषार्थ करके कुछ इच्छा पूर्ति करना चाहते हो तो राजयोग अपनाइए। विभिन्न प्रकार के योग हैं जो आपकी प्रकृति है, उसके अनुसार आप चलिए। उसकी तरह आप चलते हैं और किसी भी तरह की कोई कमी या माइनस है तो प्लस हो जाएगी। यह योग का पहला अर्थ है।

योग का एक दूसरा अर्थ भी है। आपको इस पृथ्वी पर भगवान ने भेजा है और भगवान ने यह अपेक्षा की है कि आप यहाँ पर पुरुषार्थ और कर्म करने के पश्चात उसी के पास आएँ, आप मोक्ष प्राप्त करें, ईश्वर का साक्षात्कार करें, ईश्वर के साथ एकाकार हो जाएँ, जो परम शक्ति है उसमें विलीन हो जाएँ। उसका अंत आत्मा के रूप में, आपके अंदर स्थापित करके आपको पृथ्वी पर भेजा है।

जब आपको भेजा है तो भारतवर्ष के अंदर एक lifestyle दिया है, एक जीवन पद्धति दी है कि आप जीएंगे कैसे? ऐसा नहीं है कि खाओ–पीओ और मस्त रहो। आप यहाँ इसके लिए नहीं आए हो। खाना–पीना और मस्त रहना ये तो भौतिक लक्षण हैं। ये तो आपकी आवश्यकता हैं। क्योंकि आपको बहुत से काम करने हैं। लेकिन यह साधन है, साध्य नहीं है। यह means है, यह aim नहीं है, यह destination नहीं है। Destination तो वास्तव में ईश्वर ने जो पद्धति स्थापित की है यहाँ पर जीवन की वह है। जो वेदों में, उपनिषदों में और गीता में बताई गई है वह अपने यहाँ की जीवन–पद्धति है। यह अनोखी जीवन पद्धति है, प्रत्येक मानव के लिए सही है, वह किसी भी देश का मनुष्य हो। यह मानव की जीवन पद्धति है। यह जो भारत में मनुष्य की जीवन पद्धति है इसे ही मानव धर्म कहते हैं। इसी को सनातन धर्म और शास्वत धर्म कहते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने इसकी व्याख्या भी इसी तरह से की है कि भारतवर्ष का यह धर्म है, यह जीवन–पद्धति है। आप जीएंगे कैसे? आप भी जीएं, दूसरे को भी जीने दें, सुख रहे,

शान्ति रहे, हर एक को समान अवसर मिलें, कहीं किसी का शोषण नहीं हो, किसी के साथ अन्याय नहीं हो। ऐसा जीने के लिए जो रास्ता है वह यहाँ की जीवन-पद्धति है। अगर इस जीवन-पद्धति के अनुसार आप चलते हैं, ये सारी की सारी चीजें आप योग करते हैं जो नियंत्रित होती हैं तो आपका शरीर अच्छा बनेगा। आपका मन के ऊपर नियंत्रण होगा। आपकी बुद्धि प्रखर हो जाएगी। आपका अंतःकरण विशाल हो जाएगा। इस योग के माध्यम से जो शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा इन चारों का जब ठीक विकास होता है तो फिर यह मनुष्य सुपरमैन बनता है, महामानव बनता है, एकात्म मानव बनता है, यह आध्यात्मिक मानव बनता है। वास्तव में सही अर्थों में वह ही मानव होता है और वह ईश्वर के नजदीक होता है।

योग के माध्यम से अगर आप अपनी जीवन-पद्धति को चलाएंगे तो आपका योग ईश्वर के साथ होगा। ईश्वर के साथ योग करने का रास्ता योग है। इसलिए इसको योग कहते हैं। अब जरा इस पर विचार करिए कि यह भारतवर्ष के लिए कितना जरूरी है, भारत की शिक्षा-पद्धति के लिए कितना जरूरी है। शिक्षा पद्धति के माध्यम से जब आप पढ़ाई करते हैं तो आप अपने जीवन को तैयार करते हैं। अगर जीवन को तैयार करने के लिए इसमें योग की शिक्षा नहीं है तो आपकी शिक्षा अधूरी है।

इसलिए मैं इस विश्वविद्यालय को धन्यवाद दूंगा कि इसमें बिना योग का डिप्लोमा लिए, बिना योग की शिक्षा पास किए आप उत्तीर्ण ही नहीं हो सकते। हरियाणा इसमें बहुत आगे जा रहा है। यहाँ का शिक्षा विभाग ओर शिक्षामंत्री यह आग्रह कर रहे हैं कि योग आवश्यक कीजिए, योग का विश्वविद्यालय खोलिए।

आखिर में अगर मैं कहूँ तो पूरे विश्व में शान्ति अगर आपको स्थापित करनी है तो आदमी का दिमाग शान्त करो। इस आदमी के दिमाग को कंट्रोल करो। इस आदमी का दिमाग हैवान हो गया है। यह आदमी शैतान हो गया है। इसका दिमाग ठीक नहीं है। दिमाग ठीक करने का एक ही तरीका है कि उसे योग के नजदीक ले जाओ। बिना योग के नजदीक लाए इस मनुष्य को आप देवता नहीं बना सकते। उसको आप दानव बना रहे हो। दानव बनाने के बाद अपेक्षा करते हो कि समाज में सुख और शान्ति स्थापित हो। मानव से अगर उसे दानव बनाना है तो उसे योग मत सिखाइए। मानव से अगर उसे देवता बनाना है तो उसे योग सिखाइए। योग बहुत जरूरी है।

इसलिए देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब पहली बार विश्व की संस्था U.N.O. संयुक्त राष्ट्र संघ में जब पहुँचे, उन्होंने सबके सामने यह घोषणा की कि आप विश्व में आतंक से परेशान हो, हिंसा से परेशान हो, अगर आप शान्ति स्थापित करना चाहते हो तो योग की तरफ जाओ। कितने आश्चर्य की बात है कि जब देश के प्रधानमंत्री संयुक्त राष्ट्र संघ के अंदर घोषणा करते हैं तो देखते ही देखते विश्व में तीन महीने के अंदर विश्व के 177 देशों ने इसका समर्थन कर दिया। सबने स्वीकार कर लिया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने प्रस्ताव पास कर लिया। हर वर्ष की 21 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस होगा। 21 जून को जब पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया तो 185 राष्ट्रों ने इसमें भाग लिया। यह योग की महिमा है।

इसलिए ऐसी कला, ऐसी भारत की पहचान, ऐसा एक आवश्यक ज्ञान जो आपके शरीर की कमी को दूर करेगा, भगवान के साथ आपका संपर्क स्थापित करेगा, उस कला को लेकर पूरे देश के विश्वविद्यालयों को बुलाकर यहाँ पर जो प्रतियोगिता आयोजित की है, इससे मुझे बहुत प्रसन्नता है। आप इस नेक काम में भाग लेकर आगे बढ़ रहे हैं, मैं आप सबको भी बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ। इन्हीं शब्दों के साथ इस अखिल भारतीय अंतर-विश्वविद्यालय महिला और पुरुष योग प्रतियोगिता 2016 का मैं शुभारंभ करने की घोषणा करता हूँ।

जयहिंद!